Dr. Madan Paswan, History.
Class: B.A. Part-I (Hons.) P-1st
Topic: Unit-III (c) The Kushanas.
(Continue.........)

August 2020
Lecture No. 06.
Date - 06.08.2020
From Page no. 1 only.

कनिष्क के शासन काल में धर्म, साहित्य, कला, विज्ञान, व्यापार आदि सभी दिशाओं में खूब प्रगति हुई। वास्तव में गुप्त वंश के पूर्व कुषाण वंश भारत के सांस्कृतिक विकास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। कुषाणों के काल में ही उत्तर भारत को यूनानी, शक, पहलव आदि के आक्रमणों से मुक्ति मिली।

कनिष्क के बाद कुषाण साम्राज्य का पतन आरंभ हो गया। उसके बाद हुविष्क कुषाण वंश का राजा हुआ। उसने हुविष्कपुर नामक नगर बसाया था। शक क्षत्रप रूद्रदामन ने उसे पराजित कर दिया। इस तरह उसके शासन काल में मालवा शकों के हाथों में चला गया। उसके बाद इस वंश का शासक वासुदेव हुआ जो विष्णु एवं शिव का उपासक था। उसके अधिकांश सिक्कों पर शिव एवं नंदी की ही आकृतियाँ खुदी हुई हैं। उसके समय उत्तर-पश्चिम का बहुत बड़ा भाग कुषाणों के हाथ से निकल गया। उसके बाद के किसी कुषाण शासक का नाम नहीं मिलता है। संभवतः उनका पतन हो गया।

कुषाण युग में शैव-धर्म एवं महायान बौद्ध धर्म के साथ-साथ कार्तिकेय सम्प्रदाय एवं वासुदेव कृष्ण सम्प्रदायों का भी विकास हुआ। कुषाणों ने मृत राजाओं की मूर्तियाँ स्थापित करने के लिए देवकुल (मंदिर बनवाने की प्रथा) की परम्परा भी प्रारंभ की। उन्होंने प्रान्तों में द्वैध शासन प्रणाली का प्रचलन किया। ईसा की प्रथम सदी में ही हिप्पॉलस नामक ग्रीक नाविक ने अरब सागर में चलने वाली मानसून हवाओं का पता लगाया। भारतीय शासकों द्वारा नियमित रूप सोने के सिक्के जारी करने की प्रथा कुषाणों के समय ही शुरू हुई। सेना की घुड़सवारी में दक्षता, सैनिक वेश-भूषा एवं व्यूह रचना के क्षेत्र में भारत को नयी जानकारियाँ इस युग में ही प्राप्त हुई।

कनिष्क की उपलब्धियाँ :-

कनिष्क का साम्राज्य पश्चिमी एशिया, चीन, मध्य एशिया, भूमध्यसागरीय प्रदेश और भारत की सभ्यताओं का मिलन स्थल था। कनिष्क के काल में ही चतुर्थ बौद्ध संगीति हुई तथा महायान धर्म का उदय हुआ। बौद्ध मत के प्रचार-प्रसार के लिए कनिष्क ने ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी। कनिष्क के दरबार के प्रमुख विद्वान थे — अश्वघोष, शून्यवाद के प्रवर्तक नागार्जुन, पार्श्व, वसुमित्र, चरक इत्यादि। अश्वघोष की प्रसिद्ध रचना बुद्धचरित को बौद्धों का रामायण कहा जाता है। अश्वघोष की तुलना मिल्टन तथा वाल्टेयर से की जाती है, तो नागार्जुन की मार्टिन लूथर से। नागार्जुन को भारत का आईस्टीन भी कहा जाता है। कनिष्क की अपेक्षा राजनीतिक स्थिरता एवं विशाल साम्राज्य ने वाणिज्य-व्यापार को काफी बढ़ावा मिला। भारत-रोम व्यापार के पक्ष में था। कनिष्क के काल में ही गांधार कला का जन्म हुआ है। कुषाणों ने कृषि को बढ़ावा देने में अपना योगदान दिया। पाकिस्तान, अफगानिस्तान और पश्चिमी मध्य एशिया में बड़े पैमाने पर सिंचाई के प्रारंभिक पुरातात्विक निशान, कुषाण काल में ही मिलते हैं।

— Dr. Madan Paswan.